प्रथम अध्याय-

" जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

"जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

१.१ जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय :-

हिंदी साहित्य के छायावाद के उद्भाव और 'कामायनी' महाकाव्य के रचयिता श्री जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य के एक सफल और अद्वीतीय साहित्यकार थे। प्रसाद का संक्षिप्त जीवन परिचय इस प्रकार है -

१.१.१ जन्म :-

प्रसाद का जन्म माघशुक्ल दशमी सं.१९४६ में काशी के गोवर्धन सराय नामक मुहल्ले के अंतर्गत एक प्रतिष्ठित कान्यकुब्ज हलवाई वैश्य परिवार में हुआ था।इनके पूर्वज पहले गाजीपुर जिले में सैदपुर नामक स्थान पर रहा करते थे।...[१]

१.१.२.मातापितादि :-

जयशंकर प्रसाद जी के पिता का नाम देवी प्रसाद साहु और माता का नाम मुन्नीदेवी था दोंनो स्वभाव से अत्याधिक धार्मिक थे।...[२]

१.१.३.वंश परिचय :-

प्रसाद के वंश के प्रथम व्यक्ति श्री जगनसाहु सैदपुर का व्यापार छोड़कर काशी चले आए। जगनसाहु के दो पुत्र थे-गुरूसहाय साहु तथा गणपत साहु। काशी में आकर इन लोगों ने सबसे पहले टेढ़ीनीम हौज कटरा में एक मकान किराये पर लिया और वहीं पर एक छोटी-सी तम्बाकू की दुकान खोली। गुरूसाहाय साहु को एक ही लडका हुआ, जिसका नाम गोबर्ध्दन साहु था ।सं १८२० में गणपत साहु और गोबर्ध्दन साहु ने मिलकर एक फर्म की स्थापना की । जिसका नाम "गणपतसाव गोबर्ध्दन साव "रखा गया। गुरूसाहाय की मृत्यु हो जाने पर दोंनो चाचा - भतीजे अलग हो गए और फर्म का भी बटवारा हो गया। गुरूसाहाय के पुत्र गोबर्ध्दन को दो लड़के हुए -रामप्रसाद और गंगुसाह। गंगुसाह निस्संतान रहे और रामप्रसाद को एक पुत्र हुआ जिसका नाम राजाराम साहु था, परंतु राजाराम साहु के भी निस्संतान रहने के कारण गुरूसाहायवाली शाखा का यहीं अंत हो गया। ...[३]

श्री गनपत साहु को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम शिवरत्न साहु था । श्री शिवरत्न साहु के छःपुत्र हुए शीतल प्रसाद, देवी प्रसाद, बैजनाथ प्रसाद, गिरजाशंकर ,जित्तुसाह, और गौरीशंकर

---

१ डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना - 'कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन' - पृष्ठ १

२ डॉ. गणेश खरे - 'युग कवि प्रसाद' -पृष्ठ १०

३ डॉ. दवारिका प्रसाद सक्सेना -'कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन' -पृष्ठ २

इन में से शीतल प्रसाद , बैजनाथ प्रसाद और गौरीशंकर को कोई भी संतान नहीं हुई। देवी प्रसाद को दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हुई ।पुत्रों के नाम थे - शम्भुरत्न और जयशंकर प्रसाद तथा पुत्रियों के नाम थे - देवकी,सेवकी और प्यारी। जयशंकर के इकलौते पुत्र श्री रत्नशंकर हैं,जो अपने परिवार के साथ काशी के गोबर्ध्दन सराय नामक मुहल्ले में रहते हैं और प्रसाद के व्यवसाय का सुचारू रूप से संचालन करते हैं ।...[१]

१.१.४ अनुवंशिक परंपरा :-

श्री गणपत साहु ने सं १८७५ में तम्बाकू की पत्ती से एक विशेष प्रकार के चुर्ण का आविष्कार किया था। यह चूर्ण 'सुघनी 'कहलाता था। इसका तत्कालीन काशी की जनता ने बड़ा स्वागत किया। इसी 'सुघनी 'का निर्माण एवं व्यापार करने के कारण प्रसाद का परिवार ' सुघनी साहु ' के नाम से विख्यात है। व्यापार संपन्न था और धन की कमी नहीं थी। शिवरत्न जी भक्तों और विद्वानों के बहुत प्रेमी थे और अतिशय दानशील भी थे। न केवल स्थानीय बल्कि बाहर से आए हुए विद्वानों का साहु जी बहुत स्वागत सत्कार करते थे।...[२]

सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से 'सुघनी साहु परिवार'का नाम काशी राज नरेश के पश्चात लिया जाता था। पितामह श्री शिवरत्न साहु और पिता श्री देवी प्रसाद जी के समय उनके घर पर कवियों , पंड़ितों , गवैयों , वैद्यों, ज्योतिषियों , पहलवानों आदि का सदैव मेला-सा लगा रहता था । ऐसे संपन्न और यशस्वी परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें उदारता , गरिमा , गंभीरता, शालीनता, काव्यकला प्रियता, मानव - प्रकृति की परख आदि गुण और विशेषताएँ अनुवंशिक पंरपरा तथा पारिवारिक परिवेश से सहज ही प्राप्त हो गयी जो उनके काव्य में आद्यांत विद्यमान हैं। सुँघनी साहु परिवार प्रसाद के जन्म के बहुत समय पहले से शिव उपासक था। शिवप्रताप और आराधना के फल स्वरूप ही प्रसाद का जन्म हुआ, ऐसा उनके माता पिता का विश्वास था। ...[३] उनकी धार्मिक वृत्ति का भी प्रसाद जी के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

१.१.५ बचपन :-

प्रसाद जी के माता-पिता तथा समस्त परिवार ने पुत्र की आकांक्षा में भगवान शंकर से प्रार्थना की थी और वैद्यनाथ धाम के झारखंड़ उज्जयनी के महाकाल तक ज्योतिर्लिगों की आराधना की थी । इसी के फलस्वरूप यह पुत्र उत्पन्न हुआ था । देवी कृपा के उपलक्ष्य में बचपन में प्रसाद जी को ' झारखंडी 'नाम से भी बुलाया जाता था।तीन वर्ष की आवस्था में केदारेश्वर के मंदिर में इनका मुंड़न संस्कार हुआ और वैद्यनाथ धाम में नामकरण संस्कार हुआ। 'सुमित्रा ' (जुलाई १९५१) में डॉ. राजेंद्र नारायण शर्मा का 'प्रसाद का बचपन 'शीर्षक से जो लेख प्रकाशित

---

१. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना - 'कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन'- पृष्ठ २

२. डॉ. विमलशंकर नागर - 'प्रसाद की काव्य प्रतिभा' - पृष्ठ २५

३. डॉ गणेश खरे - 'युग कवि प्रसाद'- पृष्ठ १०

हुआ था, उसमें वे प्रसाद के जीवन की एक अद्‌भूत और महत्वपूर्ण घटना का वर्णन करते हैं - " अन्न प्राशन संस्कार के बाद उसी पूजा - विधी में पुस्तक , बही - मासि पात्र , लेखनी तथा बच्चे के मन लुभानेवाली अन्य बहुत- सी सप्तरंगी वस्तुओं तथा खेलने के योग्य लाल-पीली पदार्थतालियों के बीच शिशु-प्रसाद को अपने मन की चीज चुनने के लिए छोड़ दिया गया। लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब सब कुछ छोड़ प्रसाद जी ने केवल लेखनी उठा ली और उसीसे खेलना आरंभ किया।अबोध अवस्था में भी प्रसाद ने अपने निश्चय तथा अपनी प्रतिभा को स्पष्ट कर दिया था।"...[१]

१.१.६ किशोरावस्था और उत्तरदायित्व :-

अपने परिवार के सांस्कृतिक संपन्न वातावरण में कवि ने शैशव से किशोरावस्था में पदार्पण किया । लेकिन इसी काल में पहली बार प्रसाद का परिचय दुःख पीड़ा , वेदना से हुआ और उनके भावुक मन पर इसका गहरा आघात हुआ । सन १९०१ में प्रसाद के पिता का देहांत हो गया । पिता की मृत्यु के बाद परिवार तथा व्यापार का सारा भार प्रसाद के बड़े भाई शंभुरत्न जी पर पड़ा । शंभुरत्न मस्त तबियत और उदार हृद्‌य व्यक्ति थे , दुनियाँ और धंधे का न तो उन्हें अनुभव था और न उनका उस ओर कोई ध्यान ही था। जिन लोगोंपर विश्वास करके उन्होंने व्यापार की देखरेख छोड़ रखी थी, उन्होंने धोका किया । परिणामतःव्यापार की हालत बिगड़ने लगी और सपंन्नता का स्तर गिरने लगा। इन परिस्थितियों को और भी अधिक सोचनिय बनाने के लिए पारिवारिक कलह भी शुरू हो गया था और लोखों रूपये का कर्ज भी आ पड़ा था। इन भीषण परिस्थितियों को हल करने के लिए धीरे-धीरे जायदाद को बेचना पड़ा । प्रसाद का किशोर होता हुआ मन यह सब देख रहा था और उस पर इन घटनाओं का अजीब प्रभाव पड़ रहा था। ...[२]

शंभुरत्न जी बिखरे हुए व्यापार को व्यवस्थित करके फिर से गत वैभव को पुनर्जीवीत करना चाहते थे । लेकीन उनकी सारी इच्छाओं और कड़े श्रम के बावजुद भी कुछ बन नहीं पा रहा था। इसी समय १९०४ ई. में उनकी माता का भी देहांत हो गया। प्रसाद जी को मातृस्नेह से भी वंचित हो जाना पड़ा । लेकीन परिवार में मृत्यु का क्रम अभी खत्म नहीं हुआ था । प्रसाद जी के अग्रज शंभुरत्न भी १९०६ ई. में चल बसे । इस प्रकार सत्रह वर्ष की अवस्था होते- होते उनपर परिवार का दायित्व और व्यवसाय का बोझ आ पडा।...[३] अंत : हम कर सकते हैं कि माता -पिता और भाई की असमायिक मृत्यु की असह्‌य पीड़ा उन्हें सहन करनी पड़ी। उन्हें उत्तराधिकार के रूप मे लाखों का ऋण, तम्बाकू का गिरता हुआ व्यापार, बटवारे को लेकर भयंकर

१. डॉ. विमल शंकर नागर - ' प्रसाद की काव्य प्रतिभा'-पृष्ठ२५

२.डॉ. विमल शंकर नागर - ' प्रसाद की काव्य प्रतिभा'- पृष्ठ २८

३.डॉ कमलाकांत पाठक -'कवि- श्री माला-कविः जयशंकर प्रसाद'- पृष्ठ ६४

गृहकलह तथा मुकदमेबाजी मिली । शायद इन्हीं कारणों से प्रसाद जी का उत्तरदायित्व बढ़ गया था।

१.१.७ वैवाहिक जीवन :-

प्रसाद जी को वैवाहिक जीवन में भी अनेक पीड़ाएँ सहन करनी पड़ी । भाई की मृत्यु के एक वर्ष बाद ही प्रसाद जी ने स्वयं अपने वैवाहिक संबंध की बातें की और २० वर्ष की आयु में (सं. १९६६में) श्रीमती विद्यावासिनी देवी से गोरखपुर में अपना पहला विवाह किया। प्रथम पत्नी १० वर्ष तक जीवीत रही। जिनकी यक्षमा के कारण मृत्यु हुई । उसकी मृत्यु के एक वर्ष बाद प्रसाद ने दूसरा विवाह किया। दूसरी पत्नी से एक वर्ष बाद एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो प्रसूतिकाल में अपनी माता के साथ चल बसा। इससे उन्हें घनीभूत पीड़ा हुई और वे ग्रहस्थ जीवन के सुखों के प्रति उदासीन हो गए।... [१] अंततःवे अपनी मातृ-तुल्य भाभी के अनुरोध को नहीं टाल सके और उन्होंने स्वंय गोरखपुर में अपना तीसरा विवाह श्रीमती कमलादेवी से किया।तीसरी पत्नी से रत्नशंकर उत्पन्न हुए जिनका नाम प्रसाद ने अपने बड़े भाई की स्मृति में शंभुरत्न का ही परिवर्तन करके रखा था।[२]

१.१.८ शिक्षा तथा ज्ञानार्जन :-

बचपन में प्रसाद को सबसे पहले गोबर्ध्दन सराय मुहल्ले मे श्री मोहिनीलाल गुप्त की अपनी निजी पाठशाला मे पढ़ने के लिए भेजा गया । वहाँ पर प्रसाद ने अक्षर ज्ञान प्राप्त किया और साथ ही कविताएँ लिखने की प्रेरणा प्राप्त की,क्योंकि मोहनलाल गुप्त स्वयं रससिद्ध कवि थे। इस छोटी- सी पाठशाला को प्रसाद आरंभिक 'सरस्वतीपीठ'कहा करते थे।उन्होंने अपनी प्रथम रचना ९ वर्ष की अवस्था में लिखी थी-

"हारे सुरेस, रमेस, धनेस, गनेस हू सेस न पावत पारे।
पारे हैं कोकिट पातकी पुंज, कलाकर ताहि छिनौ लिखी तारे।। "

यह छंद लिखकर उन्होंने अपने गुरू रससिद्ध श्री मोहिनीलाल गुप्त को सुनाया था जिसे सुनकर वे चकित रह गए थे और प्रसाद जी को महाकवि बनने का आशीर्वाद दिया था।...[३]

प्रसाद जी की नियमित शिक्षा क्विस कॉलेज में सातवीं कक्षा तक हो सकी थी । इसके बाद पिता का निधन एवं घर की जिमेदारियों के झंझट के कारण उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा । किंतु उनके अग्रज शंभुरत्न जी ने घर पर उनके अध्यापन की समोचित व्यवस्था कर दी थी । कई शिक्षक आकर उन्हें संस्कृत,उर्दु,अंग्रेज़ी,हिंदी आदि पढ़ाया करते थे।वेद-उपनिषद आदि का

---

१. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना-'कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन पृष्ठ ४(सेउद्धृत)

२. डॉ गणेश खरे – 'युग कवि प्रसाद' - पृष्ठ ११

३.डॉ गणेश खरे -'प्रसाद के प्रगीत' -पृष्ट ५३(से उद्धृत)

अध्ययन प्रसाद ने पंड़ित दीनबंधु ब्रह्मचारी के द्वारा किया। इसके अतिरिक्त अन्य वैदिक ग्रंथ वैष्णव और शैव-दर्शनों का अध्ययन स्वतः करके इनका पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया , जिसकी छाप उनकी रचनाओं पर विद्यमान है।...[१]

१.१.९ प्रसाद की अंग्रेज़ी साहित्य प्रियता :-

प्रसाद को संस्कृत में कालिदास , हिंदी में सुर, तुलसी और भारतेंदु , फ़ारसी मे ऊमर खय्याम, जलालुद्दीन रूनी और हाफिज़ तथा उर्दू में मिर, कासीम, नौक, सौदा और गालीब की रचनाएँ उन्हें विशेष पसंत थी । इसके बावजुद प्रसाद को अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा ज्ञान था। इस प्रसंग के संबंध में श्री लक्ष्मी शंकर व्यास ने एक अनुरंजक घटना का उल्लेख किया है। उन्हीं के शब्दों में- " प्रसाद जी की 'विराम चिन्ह' कहानी अंग्रेज़ी में अनुदित की गई । अंग्रेज़ी साहित्य के एक अच्छे ज्ञाता ने उसमें संशोधन भी कर दिया तब वह प्रसाद जी को दिखाई गई। प्रसाद ने अपनी कहानी के अंग्रेज़ी अनुवाद को देखकर एक- दो स्थानों पर प्रयोग तथा मुहाँवरों संबंधित ऐसे बारिक संशोधन बताएँ, जिन्हें देखकर अनुवादक महोदय को दंग हो जाना पड़ा । ऐसा था प्रसाद जी का अंग्रेज़ी का सुक्ष्म ज्ञान। ...[२]

उनके निजी पुस्तकालय में अरेबियन नाइटस, पोप, शेक्सपियर , प्लूटाकर्स लाइफस, इंडियन लेंगवेज , फर्स्ट स्टेप इनसलिड , फ्रामडान टू डस्ट, हिस्ट्री ऑफ रोम, हिस्ट्री ऑफ ग्रीस, हिंदु सोसियोलॉजी , चेंब्रस ,इटीमोलॉजकल इंग्लिश डिक्सनरी आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें थीं,जो उनकी अंग्रेज़ी साहित्य-प्रियता और अध्ययनशीलता की सूचक हैं।...[३]

१.१.१० दिनचर्या :-

प्रसाद नित्यप्रातः ब्राह्म मुहूर्त में उठकर पहले साहित्य रचना किया करते थे । तदुपरांत 'बेनिया पार्क' में टहलने के लिए जाते । वहाँ प्रेमचंद, व्यास , गमहारी आदि से भेंट हो जाती और उनके साथ पर्याप्त समय तक घुमते रहते । फिर लौटते हुए डॉ.एच. सिंह के यहाँ पर भी कुछ देर बैठते और घर आकार दूध पीते तथा दो घंटे तक व्यापार कार्य देखते थे । इसके बाद तेल मालिश, स्नान एंव व्यायाम किया करते थे। दोपहर १२ बजे भोजन करके सो जाते थे। वे दोपहर को नित्य सोया करते थे । सोने के उपरांत दो-तीन बजे उठकर कारखाने में आते और व्यापार संबंधी पत्रों तथा किरायदारों की बातों का फैसला करते थे। और रात के ९ बजे तक वहाँ मित्र मंड़ली में खुब गपशप किया करते थे । रात के १० बजे तक घर लौट आते और भोजन कर के सो जाते थे।[४]

---

१ डॉ द्वाारिका प्रसाद सक्सेना-'कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन'- पृष्ठ ५

२ डॉ. गणेश खरे - 'युग कवि प्रसाद'- पृष्ठ १२

३ वही।

४ डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना-'कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन'- पृष्ठ ७

१.१.११ मित्र- गोष्ठी :-

प्रसाद की मित्र मंड़ली में काशी के सभी साहित्यकार संम्मिलित थे । वैसे उनके अंतरंग मित्र तो अधिक न थे। उन्हे में श्री रायकृष्णदास, विनोदशंकर व्यास ,केदारनाथ पाठक , लक्ष्मीनारायण सिंह 'ईश' आदि प्रसिद्ध हैं। यह मित्र मंड़ली शाम को नारियल टोलेवाली दुकान के सामने चबुतरे पर नित्य जुड़ती थी। कुछ साहित्यकार प्रसाद के घर पर यदा- कदा आते रहा करते थे। जिनमें से अधिकांश उनके प्रिय मित्र थे और जिनके साथ साहित्य के बार में प्रसाद जी प्रायः बड़ी देर तक बाते किया करते थे । उनमें से सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त , सुमित्रानंदन पंत , सुर्यकांत त्रिपाठी ' निराला',महादेवी वर्मा , रामचंद्र वर्मा , प्रेमचंद्र , जैनेद्रकुमार , केशवप्रसाद मिश्र,बालकृष्ण शर्मा, शातिप्रिय द्विवेदी आदि प्रसिद्ध हैं। शेष समय में जब प्रसाद नागरी प्रचारिणी सभा में जाते तो वहाँ डॉ. शाम सुंदर दास आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लाला भगवानदिन ,अयोध्यासिंह उपाध्याय आदि से मिलते रहते थे।इसके अतिरिक्त कुछ बाहर से आए हुए और काशी में रहनेवाले साहित्यकार भी प्रसाद जी के मित्र थे जिनमें से सर्वश्री रूपनारायण पांड़ेय ,शिवपूजन सहाय, गोविंद वल्लभ पंत, विशंभरनाथ जिज्जा,उग्र जी, बेढ़ब बनारसी, सुमन बेनिपुरी , लक्ष्मीनारायण मिश्र, नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. राजेंद्र वाचस्पाति पाठक आदि प्रसिद्ध हैं।[१] अतः हम कह सकते हैं कि उस काल के लगभग सभी हिंदी के साहित्यकारों का प्रसाद से अच्छा परिचय था ।

१.१.१२ विभिन्न यात्राएँ :-

प्रसाद जी ने पाँच वर्ष की अवस्था मे अपनी माँ के साथ कुछ धार्मिक संस्कारो के लिए जैनपुर और विध्याचल की सुरम्या घाटियों की पहली यात्रा की थी। अपनी नौं वर्ष की अवस्था में तो प्रसाद जी ने अपनी माँ के साथ चित्रकुट नैमिषारण्य, मथुरा , ओंकारेश्वर , धाराक्षेत्र , उजैन्न , पुष्कर , ब्रज, अयोध्या आदि संस्कृतिक धार्मिक एंव ऐतिहासिक महत्व प्राप्त स्थान की एक लंबी यात्रा कर डाली ।[२] प्रसाद जी अपने निधन के पाँच वर्ष पूर्व - गया , महोदाधि , भुवनेश्वर पुरी आदि की एक और लंबी यात्रापर सपरिवार गए थे । इसके पश्चात प्रसाद जी ने अपने पुत्र रत्नशंकर के अत्याधिक अनुरोध पर प्रदर्शनी देखने के लिए लखनऊ की यात्रा की । यहीं उनकी अंतिम यात्रा थी। बीच- बीच में दो बार प्रयाग भी गए थे । शेष सारा जीवन बाबा विश्वनाथ की छाया से युक्त काशी में ही व्यतीत हुआ।[३]

---

१. डॉ. विनोद शंकर व्यास - -'प्रसाद और उनका साहित्य'- पृष्ठ २४

२. डॉ. गणेश खरे --'प्रसाद के प्रगीत'-पृष्ठ ५४

३. डॉ. गणेश खरे -'युग कवि प्रसाद '-पृष्ठ १३

१.१.१३ महाप्रयाण :-

सं.१९९३ में वे (प्रसाद) एक बार डॉ.मोतिचंद के छोटे भाई नारायण चंद की शादी में दावत खाने गए। वहाँ पर खाते- खाते प्रसाद को जाड़ा लगने लगा और बुखार आ गया । बहुत दिनों तक सभी लोंग मलेरिया समझते रहे। अंत में शीतकाल के आते ही उनको खासी भी प्रारंभ हो गयी किंतु रोग का ठिक निदान न हुआ। सं. १९९३ के शीतकाल में वे लखनऊ प्रदर्शनी देखने गए। वहाँ से लौटकर आने के कुछ दिन बाद वे पुनः ज्वर से पीड़ित हुए।अब की बार उनके कफ़ आदि की जाँच हुई, जिससे पता चला कि वे राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित हैं। सं. १९९४ के आरंभिक दिनों मे वे फिर कुछ स्वस्थ हो गए,परंतु वर्षा काल के आते ही रोग फिर उखड़ आया। डॉक्टरों ने प्रसाद को स्थान परिवर्तन की सलाह दी परंतु उन्हें काशी को छोड़कर कहीं भी जाना पसंद न था।ऐसी भयंकर बीमारी के अवसर पर भी वे -अपने पूत्र के विवाह की योजना बनाया करते थे।उस समय डॉ. एच. सिंह अपनी होमियोपैथिक औषधियों से उनकी चिकित्सा करते थे। क्योंकि धार्मिक मनोवृत्ति के कारण वे अन्य अंग्रेज़ी औषधियाँ खाना अच्छा नहीं समझते थे । अंत में कार्तिक शुक्ल एकादशी सं. १९९४ वि. तदनुसार १५ नवंबर १९३७ को इस महाकवि का महाप्रयाण हो गया। रात्री के ८ बजे प्रसाद जी की शवयात्रा निकाली । पूर्वजों की प्रथानुसार काशी के हरिशचंद्र घाटि पर उनकी चिता का निर्माण हुआ। तदुपंरात कुछ ही देर में अग्निदेव ने उनके पार्थिव शरीर को पंचतत्वों में विलीन कर दिया। इस तरह लगभग ४८ वर्ष की आयु में ही हिंदी का यह अमर कवि हिंदी जगत से विदा हो गया ।[१]

१.२ प्रसाद का व्यक्तित्व :-

१.२.१ शारीरिक गठन एवं वेशभूषा :-

प्रसाद अत्यंत भव्य एवं गंभीर आकृति के पुरूष थे। उनका कद कुछ नाटा ,शरीर बहुत कसा हुआ हृष्ट-पुष्ट तथा सुगठित था।कसरत कुश्ती ने उनके शरीर को सुड़ैल बना दिया था।वे गौर वर्ण के व्यक्ति थे और चहरे पर सदैव तेज झलकता था। किशोरावस्था में वे प्रायः शेखानी तथा पाजामा पहनकर बाहर निकलते थे, सिर पर लाल व हरी चुंदरी की लट्टूदार पगड़ी धारण करते थे। युवावस्था में वे कभी -कभी पीतांबर पहनते उसी के जोड़ का उपरना ओढ़ते तथा गले में पुष्पमाला और मस्तक पर त्रिपुंड लगाया करते थे।[२] प्रसाद जी की साधारण वेशभूषा में पहले शांतिपुरी धोती और ढ़ाका का मलमल का कुर्ता सम्मिलित था परंतु पीछे वे खद्दर भी पहनने लगे थे। जाड़ों में प्राय वे सुँघनी रंग के पट्टू का कुर्ता तथा सकल पारे की सींवन का रूईदार ओवरकोट पहनते थे, आँखो पर चष्मा और हाथ में डंडा रहता था।इस तरह वे अंत में सादा

१.डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना-'कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन'- पृष्ठ ५

२.वही -पृष्ठ ८

जीवन व्यतीत करने लगे थे।[१]

१.२.२ स्वभाव :-

प्रसाद अत्यंत सैम्य एवं गंभीर स्वभाव के व्यक्ति थे। वे नम्र निरभिमानी और कुचक्रों से सदैव दूर रहनेवाले उदार आशय व्यक्ति थे।उन्हें कभी किसी पर क्रोध नहीं आता था।मित्रों से खूब हँसी-मजाक करते, उन्हें छेड़ते और उनकी बातों में रस लिया करते थे।वे अपने कटु से कटु आलोचक के बारे में भी कोई अपशब्द नहीं कहते थे।प्रसाद अत्यंत संकोची स्वभाव के व्यक्ति थे। वे कभी किसी को धन देकर वापस नहीं माँगते थे।वे साक्षात्कार से सदैव दूर रहते थे,क्योंकि बीसवी शताब्दी के पत्रकारों की तिल का ताड़ बनानेवाली मनोवृत्ति से उनका अच्छा परिचय था। वे मौन गंभीरता का अभिनय नहीं किया करते थे, अपितु बड़े ही मृदु-भाषी हँस-मुख, मिलनसार, सहृदय और व्यवहार-कुशल व्यक्ति थे।[२]

१.२.३ सात्विक प्रवृत्तिः-

प्रसाद जी का व्यक्तित्व हर दृष्टि से असाधारण कोटि का रहा है। वे पर्णतः सात्विक प्रवृत्ति के थे। पान को छोड़कर उन्हें अन्य व्यसन नहीं था।प्रायः दिनरात ही उनके घर में अभ्यागतों के स्वागतार्थ भाँग छनती रहती थी, किंतु प्रसाद जी उसे भी नहीं लेते थे।[३]

१.२.४ धार्मिक एवं उत्सव प्रियः-

पारिवारिक परिवेश के कारण ही प्रसाद जी बड़े धार्मिक एवं उत्सव प्रिय रहे होंगे। उन्होंने अपने घर के समीप ही शिवजी का मंदिर बनवाया था, जिसमें वे नित्यप्रति अपने दो-तीन घंटे व्यतीत किया करते थे। वे शिव को परात्पर ब्रह्म मानते थे तथा शिवरात्रि का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया करते थे। [४]

१.२.५ कलात्मकता :-

वे (प्रसाद) अपने काव्य की भाँति दैनिक जीवन की क्रियाओं, उपयोग की वस्तुओं, रहन-सहन,वेषवन्यास आदि सभी में अपूर्व कलाकारिता का परिचय देते रहते थे।व्यास जी ने लिखा है - "आर्थिक कठिनाईयों के कारण उनके कमरे में आवश्यक फर्निचर आदि का अभाव रहता था, किंतु फिर भी वे प्रतिदिन वस्तुओं के कौशल्यपूर्ण स्थानांतरण द्वारा कमरे की शोभा बढ़ा दिया करते थे।" [५]

१.डॉ. विनोद शंकर व्यास -'प्रसाद और उनका साहित्य'- पृष्ठ ३५

२.वही -पृष्ठ २५

३.डॉ. गणेश खरे --'प्रसाद के प्रगीत'-पृष्ठ १३

४. वही।

५.डॉ. विनोद शंकर व्यास - -'प्रसाद और उनका साहित्य'- पृष्ठ १२

१.२.६ संगीत प्रेमी :-

संगीत से उन्हें बहुत प्रेम था। वे संगीतज्ञ तो नहीं थे,किंतु उसके रसज्ञ और मर्मज्ञ थे। शात्रीय संगीत उन्हें विशेष पसंद था। संगीत कला के रसास्वादन के लिए वे यदा- कदा वेश्याओं के यहाँ भी निस्संकोच भाव से जाया करते थे।काशी की 'सिद्धेश्वरी बाई ' का संगीत उन दिनों बड़ा प्रसिद्ध था। [१]

१.२.७ सामाजिकता :-

अंतर्मुखी प्रवृत्ति होने पर भी प्रसाद को समाज के किसी भी व्यक्ति से घृणा न थी और न कभी किसी व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से ही देखते थे । प्रसाद समाज की सुक्ष्मातिसुक्ष्म बातों का बड़ी गहराई के साथ अध्ययन करते थे । प्रसाद के समाज प्रेम की झलक उनके नाटकों,काव्यों,उपन्यासों में सर्वत्र विद्यमान है। [२]

१.२.८ सच्चे देशभक्त :-

राजनीतिक जीवन मे प्रसाद सच्चे देशभक्त थे।देश के गौरव और मर्यादा का उन्हें पूरा-पूरा ज्ञान था और उसका वह पोषन करने में सदैव प्रयत्नशील रहते थे। किंतु सक्रिय राजनीति में उन्होंने कभी भाग नहीं लिया था। इस प्रकार और कोटि के कलाकार के लिए राजनीति मे सक्रिय भाग लेना संभव नहीं होता।गांधीजी के व्यक्तित्व ने उनको काफ़ी प्रभावित किया था।जाती -भेद, छुआ-छूत,पाखड़ आदि में उनका विश्वास नहीं था। समसामायिक समस्या के प्रति वे जागरूक थे। [३]

१.२.९ निस्वार्थ साहित्य- सेवा :-

प्रसाद जी आजीवन साहित्य की निस्वार्थ भाव से सेवा करते रहें । पत्र -पत्रिका में रचना प्रकाशित होने के उपलक्ष्य में प्राप्त पुरस्कार भी उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किए। उन्होंने अपनी किसी पुस्तक को पुरस्कार हेतु न तो भेजा और न प्रकाशक को भेजने की अनुमति दी तथा लोकप्रियता का भी उन्हें मोह न था। वे कवि संम्मेलनों में भाग लेने और उनका सभापतित्व करने से दूर रहा करते थे । बहुत आग्रह करने पर बड़ी कठिनाई के साथ अपनी लिखी पुस्तक से ही बैठे- बैठे कुछ पढ़ दिया करते थे।[४]

---

१. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना — 'कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन'- पृष्ठ १४

२. वही - पृष्ठ -११-१२

३. डॉ विमल शंकर नागर — 'प्रसाद की काव्य प्रतिभा' पृष्ठ ३१

४. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना —'कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन' -पृष्ठ ११

१.२.१० व्यक्तिगत दार्शनिक प्रवृत्ति :-

किशोर जीवन के दुःखों और विषमताओं ने उन्हें जीवन-म्रण के रहस्योद्घाटन की ओर उन्मुख किया । कालांतर में वह उन्ही परिस्थितियों उपर उठकर अद्वैतमूलक आनंदवाद और कर्मव्यता के एकनिष्ठ उपासक बने गए थे । उनके इस आनंदवाद का दार्शनिक आधार शैवाद्वैत है। अपनी इसी व्यक्तिगत दार्शनिक प्रवृत्ति के कारण नाटककार प्रसाद अपने पात्रों एवं घटनाओं को साधारण दर्शकों व पाठकों तक पहुँचने में असफल रहे हैं । [१]

१.२.११ समन्वयात्मक दृष्टिकोन :-

प्रसाद के व्यक्तित्व का मूल धरातल समन्वय है। कल्पनावृत्ति इन्के समस्त साहित्यिक रूपों को मूल स्त्रोत है । कल्पना की आधारभूमि पर जब दर्शन और अतीत का संयोग होता है, तब प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों की सृष्टि होती है । यही समन्वयात्मक दृष्टिकोन प्रसाद जी के शिल्पविधान में भी कार्यरत मिलता है । प्रसाद की महत्ता एक संतुलित एवं समन्वित पद्धति के निर्माण में ही नहीं तो उसे व्यवहारिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप प्रधान करने में भी है। [२]

१.२.१२ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पुन :प्रतिष्ठा करनेवाले :-

प्रसाद - साहित्य की प्रमुख विशेषताओं मे से एक विशेषता है -' भारतीय संस्कृतिक मुल्यों की पुनः प्रतिष्ठा' । आ. शास्त्री लिखते हैं , " जयशंकर प्रसाद ने हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा में महत्वपूर्ण सृजन किया और नवीन दृष्टि के साथ सांस्कृतिक, सामाजिक स्थितियों का मूल्याकंन स्थापित किया। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पुन : प्रतिष्ठा करनेवाले प्रसाद ही हैं। प्रसाद ने अपने साहित्य द्वारा यह सिद्ध किया है कि भारतीय संस्कृति के सूत्रों पर विश्व को एक नवीन दिशा प्रदान की जा सकती है। [३]

१.२.१३ प्रतिपाद्य विषय के लिए प्रयत्नशील :-

महाकवि प्रसाद जी ने सृजन प्रक्रिया के आधार स्वरूप समस्त वाङ्.मय का अध्ययन किया । इस संबंध में आ. शास्त्री लिखते हैं, "प्रसाद जी की यह विशेषता कही जा सकती है कि अपने प्रतिपाद्य के लिए उन्हें जहाँ से जितनी सामग्री प्राप्त हो सकती थी , उसके लिए वे हर क्षण प्रयत्नशील रहे और तत्संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए वैदिक ग्रंथों से लेकर शीलालेखों तक की ज्ञान यात्रा की , इतिहास के पृष्ठों में उन पंक्तियों को खोज निकाला और फिर बिखरी हुई सामग्री को एकत्रित कर उन्होंने अपनी सृजन का आधार बनाया। " [४]

---

१. डॉ. शांति मलिक - 'हिंदी नाटकों की शिल्पविधी का विकास '- पृष्ठ १८४

२. वही - पृष्ठ —१०५

३.आ.उमेश शास्त्री-'प्रसाद के साहित्य में आदर्शवाद एवं नैतिक दर्शन'-पृष्ठ २(प्राक्कथन)

४. वही

१.३ प्रसाद का हिंदी साहित्य में योगदान :-

प्रसाद ने अपनी नौं वर्ष की आयु से साहित्य साधना आरंभ की और जीवन के अंतिम क्षणों तक अर्थात लगातार ३६ वर्षों तक गहन तप करते रहे। इस बीच उन्होंने काव्य, नाटक,उपन्यास,कहानी,चंपू,जीवनी तथा निबंध प्रर्याप्त मात्रा में लिखें हैं।प्रसाद का साहित्यिक परिचय इस प्रकार है-

१.३.१ काव्य :-

१ चित्राधार २ कानन कुसुम ३ करूणालय ४ महाराणा का महत्व
५ प्रेम पथिक ६ झरना ७ ऑसू ८ लहर ९ कामायनी

१.३.२ उपन्यास :-

१ कंकाल २ तितली ३ इरावती (अधुरा)

१.३.३ कहानी :-

१ छाया २ प्रतिध्वनि ३ ऑधी ४ इंद्रजाल

इन सभी संग्रहो में ७० कहानियॉ संग्रहित हैं।

१.३.४ निबंध :-

प्रसाद जी ने साहित्यिक, ऐतिहासिक समिक्षात्मक निबंध लिखे हैं।

१ साहित्यिक निबंध :-

१ प्रकृति - सौदर्य २. भक्ति ३. हिंदी-साहित्य सम्मेलन ४. सरोज ५. हिंदी कविता का विकास यह निबंध ' इंदु ' पत्र में सं. १९६६ से लेकर सं. १९६९ तक प्रकाशित हुए थे ।

२ ऐतिहासिक निबंधः-

१ . सम्राटचंद्र गुप्त मौर्य २. मौर्यों का राज्य परिवर्नन
३ .आर्यावर्त का प्रथम सम्राट ४. दसराज युद्ध

३ समिक्षात्मक निबंध :-

१ चंपू २. कवि और कविता ३ कविता - रसास्वाद
४ काव्य और कला ५.रहस्यवाद ६. रस
७. नाटकों मे रस का प्रयोग ८. नाटकों का आरंभ ९. रंगमंच
१० आरंभिक पाठ्य काव्य आरंभिक पाठ्य काव्य ११ यथार्थवाद और छायावाद

इनमें से अंतिम ८ निबंध-'काव्य और कला तथा अन्य निबंध' के नाम से संकलित किए गये हैं ।

१.३.५ चंपू :-

१. उर्वशी २. ब्रभुवाहन दोनो चित्राधार में संकलित है ।

१.३.६ जीवनी :-

१ चंद्रगुप्त मौर्य

१.३.७ प्रबंधात्मक काव्य :-

१ प्रेम राज्य (चित्राधार में संकलित)
२ अयोध्या का उद्धार (चित्राधार में संकलित)
३ शोकाच्छावास

१.३.८ प्रसाद का नाट्य साहित्य में योगदान :-

१ सज्जन २ कल्याणी - परिणय ३ करूणालय ४ प्रायश्चित ५ एक घूँट
६ कामना ७ राजश्री ८ विशाख ९ अजातशत्रू १० जन्ममेजय का नागयज्ञ

११ स्कंदगुप्त १२ चंद्रगुप्त १३ ध्रुवस्वामिनी

डॉ. पांड़ेय जी लिखते हैं - " इनमें (प्रसाद साहित्य में) 'उर्वशी 'प्रसाद जी ने स्वयं नाटक के स्थान पर 'चंपू' माना है ।' विशाख 'नाटक की रचना के पूर्व प्रसाद जी ने 'यशोधर्म देव ' नामक नाटक लिखा था। विद्वानों ने उसकी ऐतिहासिकता को स्वीकार नहीं किया। प्रसाद जी अप्रामाणिक इतिहास को अपने नाटक का विषय नहीं बनाना चाहते थे।अंतः उन्होंने उस नाटक को नष्ट कर दिया 'अग्निमित्र 'नाटक अपूर्ण है । कुछ अंश लिख लेने की बाद आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की प्रेरणा से उसे 'इरावती 'उपन्यास के रूप में लिख दिया । प्रसाद जी की मत्यु के बाद 'अग्निमित्र 'का यह एक अंश प्रकाशित किया गया । " [१]

निष्कर्ष :-

प्रसाद जी का शैशव जीवन हर्ष उल्हास से बीता । अपितु किशोरावस्था में उनके माता - पिता तथा बड़े भाई की असमायिक मृत्यु के कारण उनका परिचय दुःख एवं वेदना से हुआ । उत्ताराधिकार के रूप मे उन्हें लाखों का ऋण , तम्माखू का गिरता व्यापार , गृह - कलह तथा मुकदमेंबाजी मिली । उनका वैवाहिक जीवन भी अस्थिर एवं पीड़ादायक रहा। फिर भी प्रसाद जी ने बड़ी सजगता से परिस्थितियों का सामना किया और उसमें सफलता भी प्राप्त की ।

जीवन की संघर्षमय परिस्थितियों में भी प्रसाद ने स्वयं अध्ययन द्वारा शिक्षा तथा ज्ञानार्जन किया । वे साहित्य, इतिहास, दर्शन और अध्यात्म के ज्ञाता थे। उनकी मित्र- मंड़ली में काशी के सभी साहित्यकार सम्मिलित थे और उस काल के लगभग सभी साहित्यकारों से उनका अच्छा परिचय था ।

प्रसाद संमृद्ध व्यक्तित्व के धनी थे। वे अत्यंत सौम्य एंव गंभीर स्वाभाव के नम्र,

---

१.डॉ.सरोज पांडेय — ' प्रसाद जी के नाटक ;- मनोसामाजिक विश्लेषण' - पृष्ठ ३८

निरभिमानी , क्रोधाहिन और कुचक्र से सदैव दूर रहनेवाले व्यक्ति थे। वे मृदुभाषी , मिलनसार , सहृदय और व्यवहार - कुशल व्यक्ति थे। पूर्णतः सात्विक प्रवृत्ति के प्रसाद को 'पान' के अतिरिक्त अन्य व्यसन न था। अंतर्मुखी प्रवृत्ति होने पर भी वे समाज किसी भी व्यक्ति को घृणा और संदेह की दृष्टि से नहीं देखते थे। सक्रिय राजनीति से दूर रहनेवाले प्रसाद जी समसमयिक समस्याओं के प्रति जागरूक थे। यश कीर्ति के पीछे न दौड़ते हुए , किसी भी पुरस्कार की अपेक्षा न करते हुए लगात्तर छत्तीस वर्षों तक उन्होंने निस्वार्थ-साहित्य साधना एवं सेवा की । इस बीच उन्होंने काव्य, नाटक,उपन्यास,कहानी,चंपू,जीवनी तथा निबंध प्रर्याप्त मात्रा में लिखें हैं।